

पुलवामा हमला : लापरवाही या षड्यंत्र

योगेन्द्र यादव

जब से जम्मू-कश्मीर के पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक का सनसनीखेज इंटरव्यू आया है तब से मानो टी.वी. चैनलों और अखबारों को सांप सूँघ गया है। गुलाब नबी आजाद के छोटे-बड़े आरोपों पर लंबे-लंबे कार्यक्रम चलाने वाले चैनलों के पास इस महाखुलासे पर चर्चा करने के लिए एक मिनट भी नहीं है। 15 अप्रैल के अखबारों में कहीं भी इस समाचार का जिक्र तक नहीं था।

यह बताना जरूरी है कि जब 14 फरवरी 2019 को पुलवामा का हादसा हुआ उस समय सत्यपाल मलिक जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल थे। उन्होंने हाल ही में पहले प्रकाश टंडन और फिर करण थापर को दिए इंटरव्यू में खुलासा किया कि यह हादसा सरकार की गलती की वजह से हुआ। उन्होंने प्रधानमंत्री को उसी दिन यह बताया कि यह हादसा हमारी गलती से हुआ है और इसे टाला जा सकता था। लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने और फिर अजित डोभाल ने उन्हें इस बारे में चुप रहने को कहा।

यह जरूरी नहीं कि इस इंटरव्यू में सत्यपाल मलिक ने जो कुछ कहा उसे ब्रह्मवाक्य की तरह सच मान लिया जाए। यह कोई छुपी बात नहीं है कि कश्मीर के राज्यपाल होते हुए सत्यपाल मलिक की प्रधानमंत्री से कुछ अनबन हो गई थी और वह पिछले कुछ वक्त से नाराज चल रहे हैं। ऐसे में उनके आरोप में किसी द्वेष या खुंदक के चलते अतिशयोक्ति या मिथ्या कथा की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता।

अगर इस इंटरव्यू के बाद राष्ट्रीय मीडिया सत्यपाल मलिक से जिरह करता, उनके हर दावे की पुष्टि करता और अगर उनसे कोई गलत बयानी हुई है उसकी आलोचना करता तो वह सर्वथा उचित होता। लेकिन इस मुद्दे पर सत्राटे से तो यही आभास होता है कि मीडिया को फोन करके धमकाया गया है कि खबरदार इस खबर को हाथ नहीं लगाना है। इस प्रायोजित सत्राटे से तो इंटरव्यू के खुलासों का वजन और भी बढ़ जाता है। लेकिन केवल इस आधार पर इतने गंभीर मुद्दे के बारे में राय बना लेना सही नहीं होगा। हमें यह जांच करनी होगी कि क्या इसका कोई स्वतंत्र प्रमाण भी है कि पुलवामा हमले के पीछे सरकार की अपनी लापरवाही या उससे भी गहरा षड्यंत्र था।

संयोग से इस प्रमाण के लिए हमें नए सिरे से शोध करने की आवश्यकता नहीं है। अंग्रेजी पत्रिका 'फ्रंटलाइन' में फरवरी 2021 के अंक में आनंदो भक्तो ने सरकार के गुप्तचर तंत्र के संदेशों की छानबीन करने के बाद यह खुलासा किया था कि इस हादसे से पहले सरकार को 1 या 2 नहीं, कुल 11 बार गुप्तचर सूचना से यह खुफि या जानकारी मिल चुकी थी कि ऐसा कुछ होने वाला है। ये सभी दस्तावेज फ्रंटलाइन पत्रिका के पास हैं। आनंदो भक्तो की इस खोजी रिपोर्ट का आज तक सरकार ने खंडन नहीं किया है।

आइए इन तथ्यों पर एक नजर डालते हैं जो सीधे सत्यपाल मलिक के दावे की पुष्टि करते हैं। फ्रंटलाइन के लेख के मुताबिक जम्मू-कश्मीर पुलिस को पहली व दूसरी चेतावनी पुलवामा हादसे से डेढ़ महीना पहले 2 और 3 जनवरी 2019 को जम्मू-कश्मीर के डी.जी.पी. और कश्मीर रेंज के आई.जी.पी. के नाम एक खुफिया रिपोर्ट से मिली। इसमें बताया गया था कि दक्षिण कश्मीर में जैश-ए-मोहम्मद 'किसास मिशन' के तहत बदले की तैयारी कर रहा है। इस चेतावनी की गंभीरता को रेखांकित करते हुए इस रिपोर्ट ने यह याद दिलाया कि पिछली बार ऐसी चेतावनी के बाद पुलवामा में सी.आर.पी.एफ. के कैम्प पर हमला हुआ था।

उसी सप्ताह 7 जनवरी को तीसरी चेतावनी मिली कि 3 आतंकवादी (जिनमें एक विदेशी है) कश्मीर के शोपियां इलाके में युवाओं को आई.ई.डी. विस्फोट की ट्रेडिंग दे रहे हैं। इसकी पुष्टि 18 जनवरी की खुफिया रिपोर्ट से हुई कि पुलवामा के अवंतीपोरा इलाके में विदेशी आतंकवादियों के सहयोग से 20 स्थानीय मिलिटेंट कुछ बढ़ा करने की योजना बना रहे हैं। उसी दिन और फिर 21 जनवरी को पता लगा कि किसास मिशन के तहत 2017 में जैश-ए-मोहम्मद के मुखिया के भतीजे तलहा राशिद की मौत का बदला लेने की योजना बन रही है। लेकिन तब तक यह पता नहीं था कि यह हमला कहां होगा, कौन करेगा और कार्रवाई की जाए तो किसके खिलाफ की जाए? 24 और 25 जनवरी को मिली खुफिया जानकारी ने इस कड़ी को भी जोड़ दिया।

पता लगा कि जैश-ए-मोहम्मद के अवंतीपोरा ग्रुप ने मुदस्सर खान के नेतृत्व में बड़े फिदायीन हमले की रिपोर्ट की है और वह समूह पुलवामा के शाहिद बाबा के संपर्क में है। अब पुलिस के हाथ कार्रवाई करने लायक सूचना थी। मुदस्सर एक स्थानीय आतंकी था और उस तक पहुंचना असंभव नहीं था। 25 तारीख को खुफिया खबर मिली कि मुदस्सर खान को मिडूरा गांव के पास देखा गया है। अब तक